शब्दबाणों का प्रहार

मध्य भारत का सबसे लो कप्रिय अखबार

राष्ट्रबाण

सिवनी

संपादक : संजय बघेल

गुरुवार 14 मई 2026 | E-PAPER: www.rashtrabaan.in ● वर्ष : 11 ● अंक : 13 ● पृष्ठ : 06 ● मूल्य : 5.00 रुपए | www.facebook.com/rashtrabaan | www.twitter.com/rashtrabaan

न्यूज ब्रीफ

दिल्ली हाईकोर्ट का गूगल और एप्पल को अश्लील कंटेंट रोकने का निर्देश

नईदिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने बुधवार को गूगल और एप्पल को मोबाइल ऐप पर अश्लील कंटेंट के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए है। चीफ जस्टिस डीके उपाध्याय और जस्टिस तेजस करिया की बेंच ने कहा कि एक पूरी पीढ़ी को बर्बाद नहीं होने दे सकते। कोर्ट ने कहा कि सोशल मीडिया कंपनियों को शिकायत मिलने पर ही नहीं, बल्कि कंटेंट अपलोड होते वक्त भी उसे रोकना होगा। साथ ही केंद्र की ष्टश्वक्रञ्ज-ढ्ढठ्ठ टीम को भी ऐसे कंटेंट पर नजर रखने को कहा गया है।

सीएम सुवेंदु के पीए हत्याकांड में किया घटनास्थल का दौरा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के सीएम सुवेंदु अधिकारी के पर्सनल असिस्टेंट चंद्रनाथ रथ की हत्या मामले में सीबीआई ने बुधवार को उत्तर परगना जिले में घटनास्थल का दोबारा दौरा किया। जांच अपने हाथ में लेने के बाद एजेंसी की यह दूसरी विजिट थी। सीबीआई की टीम एडवांस 3डी स्कैनर के साथ मौके पर पहुंची और कई घंटों तक घटनास्थल की जांच की। एजेंसी डिजिटल मैप तैयार कर हत्या से पहले की घटनाओं को समझने की कोशिश कर रही है। राज्य सरकार के अनुरोध पर सीबीआई ने सोमवार को इस मामले की जांच शुरू की थी और सात सदस्यीय एसआईटी का गठन किया गया।

यूसीसी को असम कैबिनेट की मंजूरी; 26 मई को होगा बिल

दिसपुर। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने बुधवार को कहा कि राज्य कैबिनेट ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को मंजूरी दे दी है। 26 मई को विधानसभा में बिल लाया जाएगा। इससे पहले उत्तराखंड, गोवा और गुजरात में भी यूसीसी से जुड़े कानून बने हैं। सीएम ने कहा कि इसके जरिए राज्य की विभिन्न समुदायों की परंपराओं और आवश्यकताओं के बीच एक संतुलन बनाना है।

राष्ट्रबाण

अगर आपको नहीं मिल रहा है आपका लोकप्रिय अखबार राष्ट्रबाण तो आज ही अपने हॉकर से बोलिए या हमे कॉल कीजिए

सिर्फ 100 रुपए महीना

संपर्क : 7000427433

सीबीएसई का 12वीं का रिजल्ट जारी: 85.20% स्टूडेंट पास

पिछले साल से 3% कम, एसएमएस भेजकर या डीजी लॉकर- उमंग पर ऐसे चेक करें मार्कशीट

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

सीबीएसई यानी सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन ने 12वीं का रिजल्ट जारी कर दिया है। कुल 85.20% स्टूडेंट्स पास हुए हैं। यह पिछले साल से 3% कम है। कुल 94,028 छात्रों ने 90% से ज्यादा नंबर स्कोर किए हैं। वहीं, 17,113 बच्चों ने 95% से ज्यादा नंबर स्कोर किए हैं। इस बार 17 फरवरी से 9 अप्रैल तक 12वीं के एग्जाम हुए थे। कॉपियां ऑन-स्क्रीन मार्किंग सिस्टम के तहत चेक की गईं। कैंडिडेट्स सीबीएसई.जीओवी.इन पर अपना रिजल्ट चेक कर सकते हैं। अगर स्टूडेट्स के मोबाइल में इंटरनेट न हो या सर्वर डाउन हो तो सब्जेक्ट वाइज अंक जानने के लिए एसएमएस भेजकर रिजल्ट प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि, ऑनलाइन स्कोर कार्ड मान्य नहीं होगा। छात्रों के लिए स्कूल से ओरिजिनल मार्कशीट लेना जरूरी है।

मेरिट लिस्ट जारी नहीं होगी

सीबीएसई बोर्ड मेरिट लिस्ट जारी नहीं करता है। इसके अलावा रिजल्ट में कोई टॉपर भी घोषित नहीं किया जाता है। बोर्ड सभी स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों को ये निर्देश देता है कि किसी भी बच्चे को स्कूल या जिले का टॉपर घोषित न करें।

लड़कियों का रिजल्ट लड़कों से 6.73% बेहतर

लड़कियों का रिजल्ट 88.86% रहा है, जबकि लड़कों का रिजल्ट 82.23% रहा है। लड़कियों का रिजल्ट लड़कों से 6.73% बेहतर रहा है। ट्रांसजेंडर स्टूडेंट्स का रिजल्ट 100% है।

त्रिवेंद्रम का रिजल्ट फिर बेस्ट, प्रयागराज फिर सबसे पीछे

त्रिवेंद्रम रीजन में 95.62% स्टूडेंट पास हुए। जो देशभर में सबसे ज्यादा है। वहीं, प्रयागराज रीजन 72.43% रिजल्ट के साथ सबसे नीचे रहा है। पिछले साल भी त्रिवेंद्रम का रिजल्ट सबसे ज्यादा और प्रयागराज का सबसे कम रहा था।

पेट्रोलियम मंत्री बोले-भारत के पास 60 दिन का कच्चा तेल

45 दिन का एलपीजी स्टॉक है; पीएम की बातों का मनगढ़ंत मतलब न निकालें

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को कहा कि भारत के पास 60 दिन का कच्चा तेल, 60 दिन की एलएनजी और 45 दिन की एलपीजी का स्टॉक है। सप्लाई के मामले में कोई दिक्कत नहीं है।

हरदीप पुरी ने दिल्ली में आयोजित सीआईआई एनुअल बिजनेस समिट में पीएम की बचत की अपील का भी जिक्र किया। पुरी ने कहा कि पीएम ने दो दिन पहले जो बातें कही हैं। उसको लेकर अफरा-तफरी मचाना बेकार है। पीएम की बातों को ध्यान से सुनें। उसका मनगढ़ंत मतलब न निकालें। दरअसल पीएम मोदी लगातार दो दिन लोगों से ईंधन और संसाधनों का कम इस्तेमाल करने की अपील कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि जहां संभव हो पेट्रोल डीजल का उपयोग कम करें और मेट्रो, इलेक्ट्रिक बस और पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें। विदेशी यात्राओं से बचें।

हरदीप पुरी बोले- तेल कंपनियों को रोजाना 1,000 करोड़ रुपए का नुकसान

हरदीप पुरी ने समिट में कहा कि सरकार ने पश्चिम एशिया संकट के कारण ऊर्जा सप्लाई में आई रुकावटों को बोझ आम जनता पर पड़ने नहीं दिया है। तेल कंपनियों को हर दिन 1,000 करोड़ रुपए का नुकसान हो रहा है, तो घाटा 1,98,000 करोड़ रुपए तक पहुंचने वाला है। अगर आप तिमाही के आंकड़ों को देखें तो कुल नुकसान 1 लाख करोड़ रुपए का है। ऐसे में, आप इसे कब तक इसी तरह बनाए रख सकते हैं? तेल की कीमतें कहां पहुंच गई हैं? पहले यह लगभग 64 या 65 के आसपास हुआ करती थीं। अब यह बढ़कर 115 प्रति बैरल के स्तर तक पहुंच गई हैं।

पुरी बोले- एलपीजी उत्पादन 36,000 से बढ़ाकर 54,000 मीट्रिक टन किया

हरदीप पुरी ने कहा- दुनिया की कुल ऊर्जा का 20% हिस्सा होर्मुज स्ट्रेट से होकर आता था। हमारे कच्चे तेल के आयात का 85 प्रतिशत हिस्सा वहीं से आता था। लेकिन इससे भी ज्यादा जरूरी बात यह है कि हमारी एलपीजी यानी वह सिलेंडर वाली गैस जिसे आप अपनी रसोई में इस्तेमाल करते हैं। उसका लगभग 60% हिस्सा होर्मुज स्ट्रेट से आता था। अब जब वह रास्ता बंद हुआ तो हमें इसके लिए इंतजाम करने थे। इस संकट से पहले, हमारा घरेलू एलपीजी उत्पादन रोजाना 35,000 या 36,000 मीट्रिक टन था। हमने अपने घरेलू उत्पादन को 36,000 से बढ़ाकर 54,000 मीट्रिक टन तक पहुंचा दिया। यह अपने आप में एक हैरान कर देने वाली उपलब्धि है।

देश के पास कितना भंडार है?

विशाखापत्तनम, मंगलुरु और पादुर में भूमिगत भंडारण में 5.33 एमएमटी (मिलियन मीट्रिक टन) कच्चा तेल रखने की क्षमता है। अभी यह लगभग 64% (3.37 एमएमटी) भरा है, जो करीब 9.5 दिनों की जरूरत पूरी कर सकता है। अगर तेल कंपनियों के स्टॉक और रणनीतिक भंडार को मिला दिया जाए, तो अभी कुल 60 दिनों का कच्चा तेल, 60 दिनों की प्राकृतिक गैस और 45 दिनों की एलपीजी है।

पर्याप्त स्टॉक कितना होता है?: अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के मानकों के अनुसार, देशों को कम से कम 90 दिनों के आयात के बराबर भंडार रखना चाहिए। भारत इस लक्ष्य से थोड़ा पीछे है, पर 60-74 दिनों का बैकअप सुरक्षित स्तर माना जाता है।

फिर ईंधन में किफायत क्यों?: पीएम की अपील का मकसद तेल की कमी नहीं, बल्कि डॉलर की बचत है। भारत अपनी जरूरत का 88% कच्चा तेल विदेश से खरीदता है जिसके लिए डॉलर में भुगतान करना पड़ता है। जंग से तेल महंगा हो गया है, जिससे देश का विदेशी मुद्रा भंडार घट रहा है।

● अगले ही दिन सफाई क्यों दी?

पीएम मोदी के 'बचत' वाले बयान के बाद जनता में पैनिक बाइंग (घबराहट में खरीदारी) शुरू हो गई थी। लोगों को लगा कि शायद लॉकडाउन जैसा कुछ होने वाला है या पेट्रोल पंप सूख जाएंगे। यह डर दूर करने के लिए बताना पड़ा कि अभी भरपूर स्टॉक है।

● देश रोज कितना तेल इस्तेमाल करता है, उस पर कितना खर्च है?

भारत में रोज करीब 50 लाख बैरल कच्चे तेल की खपत होती है। जंग से पहले हम रोजाना 33 करोड़ (करीब 3141 करोड़ रु.) खर्च करते थे, जो अब 50 करोड़ (करीब 4,760 करोड़) हो गया है।

● क्या पेट्रोल-डीजल महंगे होंगे?

एक्सपर्ट कहते हैं कि तेल कंपनियों का घाटा कम करने के लिए 15 मई के आसपास पेट्रोल और डीजल की कीमतों में ज्4 से ज्5 प्रति लीटर की बढ़ोतरी हो सकती है। एलपीजी सिलेंडर के दाम भी 50 रुपए तक बढ़ सकते हैं।

ट्रम्प बोले- ईरान के खिलाफ हर हाल में जंग जीतेंगे

वे समझौता करेंगे या तबाह हो जाएंगे; अमेरिका ने युद्ध में 29 अरब डॉलर खर्च किए

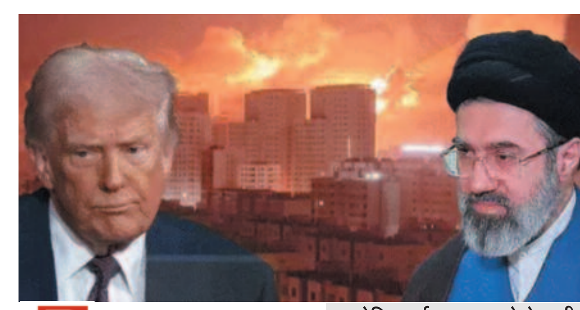

राष्ट्रबाण | तेल अवीव | एजेंसी | rashtrabaan.in

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान के खिलाफ जारी जंग अमेरिका हर हाल में जीतेगा। चीन रवाना होने से पहले उन्होंने कहा, 'ईरान या तो समझौता करेगा या फिर तबाह हो जाएगा। ' ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका के पास हालात संभालने के लिए हर विकल्प मौजूद है। उन्होंने बताया कि चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ उनकी बातचीत में ईरान युद्ध और होर्मुज स्ट्रेट संकट पर भी चर्चा होगी। हालांकि, व्यापार बैठक का मुख्य मुद्दा रहेगा।

अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका ने 74 दिनों की जंग में अब तक कम से कम 29 अरब डॉलर खर्च किए हैं। यह रकम सिर्फ हथियारों और सैन्य उपकरणों पर खर्च हुई है। इसमें सैन्य ठिकानों को हुए नुकसान का खर्च शामिल नहीं है। अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कांग्रेस से अतिरिक्त रक्षा बजट की मांग की। उन्होंने कहा कि दुनिया की सबसे ताकतवर सैन्य शक्ति बने रहने के लिए अमेरिका को 1.5 लाख करोड़ डॉलर की जरूरत है।

अमेरिका-ईरान तनाव से तेल की कीमतों में बड़ा उछाल: शांति वार्ता अटकने के बाद कच्चे तेल की कीमतों में 3% से ज्यादा तेजी आई। ब्रेंट क्रूड 107.68 डॉलर प्रति बैरल और डबल्यूटीआई 101.61 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया।

2. ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट को 500किमी का 'ऑपरेशन जोन' बताया: ईरान की रेवोल्यूशनरी गार्ड ने कहा कि अब होर्मुज स्ट्रेट सिर्फ समुद्री रास्ता नहीं, बल्कि 500 किलोमीटर तक फैला ऑपरेशन एरिया माना जाएगा।

3. रिपोर्ट- पाकिस्तान ने ईरानी विमानों को अपने एयरबेस पर जगह दी: एजेंसी की रिपोर्ट में दावा किया गया कि पाकिस्तान ने अमेरिकी हमलों से बचाने के लिए ईरानी सैन्य विमानों को नूर खान एयरबेस पर पार्किंग की अनुमति दी।

विजय ने 24 घंटे में ज्योतिषी को ओएसटी से हटाया

सहयोगियों-विपक्ष ने विरोध किया था; इन्होंने एक्टर के तमिलनाडु सीएम बनने की भविष्यवाणी की थी

राष्ट्रबाण | चेन्नई | एजेंसी | rashtrabaan.in

तमिलनाडु में फ्लोर टेस्ट पास करने के कुछ घंटे बाद ही मुख्यमंत्री विजय ने ज्योतिषी राधन पंडित को स्पेशल ड्यूटी ऑफिसर (ओएसडी) पद से हटा दिया। विजय ने पद से हटाने के 24 घंटे पहले ही उन्हें जिम्मेदारी दी थी, लेकिन विपक्ष और सहयोगी पार्टियों के विरोध के बाद फैसला वापस लेना पड़ा। राधन लंबे समय से विजय के करीबी माने जाते हैं। उन्होंने विजय के मुख्यमंत्री बनने की भविष्यवाणी की थी। उनकी सलाह पर ही 10 मई को विजय के शपथ ग्रहण का समय भी बदला गया था। राधन ज्योतिषी होने के साथ टीवीके के प्रवक्ता भी रहे हैं।

अखिलेश यादव के भाई प्रतीक का निधन

अस्पताल पहुंचने से पहले ही सांसें थमीं, फेफड़े में खून का थक्का जमने से कार्डिएक अरेस्ट आया

राष्ट्रबाण | लखनऊ | एजेंसी | rashtrabaan.in

सपा प्रमुख अखिलेश यादव के छोटे भाई प्रतीक यादव का बुधवार को निधन हो गया। उनकी उम्र 38 साल थी। सुबह 6 बजे पत्नी अपर्णा यादव के भाई अमन सिंह बिष्ट उन्हें लखनऊ के सिविल अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सिविल अस्पताल के चीफ मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. डीसी पांडेय के मुताबिक, जब प्रतीक को लाया गया, तब उनकी पल्स पूरी तरह डाउन थी। हार्ट भी रुक चुका था। लखनऊ मेडिकल कॉलेज में प्रतीक यादव के शव का पोस्टमॉर्टम कराया गया। रिपोर्ट में बताया गया कि कार्डिएक अरेस्ट से प्रतीक की मौत हुई है। विसरा रिपोर्ट के बाद और चीजें स्पष्ट होंगी। प्रतीक का शव घर लाया गया है। अंतिम संस्कार कल, गुरुवार को लखनऊ में दोपहर 12:30 बजे पिपरा घाट पर होगा। इस बीच, प्रतीक की पत्नी और भाजपा नेता अपर्णा यादव भी असम से लखनऊ लौट आई हैं। वो एयरपोर्ट से सीधे अपने घर पहुंचीं।

किश्तवाड़ में आतंकी को पनाह देने वाला शिक्षक गिरफ्तार :एक साथी भी पकड़ाया

पुंछ में घुसपैठ की कोशिश में एक आतंकी ढेर, एक घायल

राष्ट्रबाण | किश्तवाड़ | एजेंसी | rashtrabaan.in

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में सुरक्षा एजेंसियों ने सरकारी स्कूल के एक शिक्षक समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया है। दोनों पर जैश-ए-मोहम्मद के आतंकियों को पनाह, खाना और दूसरी मदद देने का आरोप है। गिरफ्तार शिक्षक की पहचान मशकूर अहमद के रूप में हुई है। वह इंदरवाल के एक सरकारी स्कूल में तैनात है। उसके खिलाफ यूएपीए के तहत मामला दर्ज किया गया है।

अधिकारियों के मुताबिक, वह चटरू इलाके में आतंकियों को लॉजिस्टिक सपोर्ट देता था। यह मामला 4 फरवरी 2026 को डिच्छर-चटरू में हुए एनकाउंटर से जुड़ा है, जिसमें आतंकी आदिल मारा गया था। इधर, पुंछ के कृष्णा घाटी सेक्टर में एलओसी पर बुधवार को घुसपैठ की कोशिश कर रहे एक पाकिस्तानी आतंकी को भारतीय सेना ने मार गिराया। उसके पास से आईईडी से जुड़ा सामान बरामद किया गया है। एक आतंकी को गोली लगी है।

सबरीमाला केस में कहा- हिंदू बने रहने के लिए मंदिर जाना जरूरी नहीं, घर में दीया जलाना भी काफी

सुप्रीम कोर्ट बोला- हिंदू धर्म जीवन जीने का तरीका

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कहा कि हिंदू धर्म जीवन जीने का तरीका है। हिंदू बने रहने के लिए मंदिर जाना या खास पूजा-पाठ जरूरी नहीं है। कोर्ट ने कहा कि घर में दीया जलाना भी आस्था दिखाने के लिए पर्याप्त है।

यह टिप्पणी चीफ जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली 9 जजों की संविधान पीठ ने की। बेंच धार्मिक स्थलों पर महिलाओं के साथ भेदभाव, सबरीमाला मंदिर और दाऊदी बोहरा समुदाय से जुड़े धार्मिक स्वतंत्रता मामलों पर सुनवाई कर रही है। बुधवार को सुनवाई का यह 15वां दिन है।

बेंच में जस्टिस बी वी नागरत्ना, एम एम सुंद्रेश, अहसानुद्दीन अमानुल्लाह, अरविंद कुमार, ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह, प्रसन्ना बी वराले, आर महादेवन और जॉयमाल्या बागची शामिल हैं।

व्यक्ति अपनी आस्था को लेकर स्वतंत्र

सुनवाई के दौरान इंटरविनर की ओर से पेश वरिष्ठ वकील डॉ. जी मोहन गोपाल ने कहा कि धार्मिक समुदायों के भीतर से ही सामाजिक न्याय की मांग उठ रही है। उन्होंने 1966 के फैसले का जिक्र करते हुए कहा कि तब हिंदू उसे माना गया था, जो वेदों को सर्वोच्च मानता है। उन्होंने कहा, हममें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि हर हिंदू वेदों को सर्वोच्च मानता है। मैं वेदों का सम्मान करता हूं, लेकिन क्या आज हर हिंदू ऐसा मानता है? इस पर जस्टिस बी वी नागरत्ना ने कहा, 'इसी वजह से हिंदू धर्म को जीवन जीने का तरीका कहा जाता है। हिंदू बने रहने के लिए मंदिर जाना या कोई अनुष्ठान करना जरूरी नहीं है।' उन्होंने कहा कि व्यक्ति अपनी आस्था को लेकर स्वतंत्र है और किसी को इसमें बाधा नहीं डालनी चाहिए।

दुनिया की वो रहस्यमयी घाटी जहां अपने आप चलते हैं पत्थर

इस दुनिया को अजीबो-ग़रीब इसलिए भी कहा जाता है कि क्योंकि यहां खूबसूरत चीज़ों के अलावा, कई ऐसे रहस्य भी मौजूद हैं, जिनकी गुत्थी वैज्ञानिक तक सुलझा नहीं पाए हैं. आपने भी ऐसे कई रहस्यमी क़िस्सों के बारे में सुना होगा. इसी क्रम में हम आपको उस रहस्यमी घाटी के बारे में बताने जा रहे हैं जिसके बारे में कहा जाता है कि यहां पत्थर अपने आप चलते हैं.

मौत की घाटी

पूर्वी कैर्लीफ़ोनिया में मौजूद डेजर्ट वैली को देथ वैली यानी मौत की घाटी भी कहा जाता है. ये जगह गर्मियों के दौरान दुनिया के सबसे गर्म व शुष्क स्थानों में शामिल हो जाती है. वहीं, इसके नाम से राष्ट्रीय उद्यान भी बना हुआ है जिसे देथ वैली नेशनल पार्क कहा जाता है. वहीं, ये जगह अपने एक रहस्य के लिए दुनिया भर में जानी जाती है. ऐसा कहा जाता है कि यहां पत्थर अपने आप रेंगते हैं. इस जगह को Racetrack Playa के नाम से भी जाना जाता है.

चलते पत्थरों वाली घाटी

लोगों को मानना है कि घाटी के मरुस्थलीय क्षेत्र में पत्थर अपने आप चलते या रेंगते हैं. अगर आप तस्वीर देखें तो आपको वो निशान नज़र आएंगे जिससे ये पता चलता है कि पत्थर एक स्थान से दूसरी जगह यात्रा कर रहे हैं.

सेलिंग स्टोन्स

तस्वीरों के ज़रिए पता लगाया जा सकता है कि ये कोई छोटे-मोटे पत्थर नहीं बल्कि कई किलों के पत्थर हैं. कुछ तो लगभग 320 किलो के हैं. पत्थरों के चलने या रेंगने की इस खूबी की वजह से इन्हें 'सेलिंग स्टोन्स' कहा गया है. हालांकि, किसी ने अब तक पत्थरों को चलते नहीं देखा है, लेकिन जो निशान पाए गए हैं कि उससे ये अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि ये ऐसा ज़रूर होता होगा.

क्या कहते हैं वैज्ञानिक

ऐसा कहा जाता है कि 1940 के दौरान कई वैज्ञानिक ने इस सवाल का जवाब ढूंढने की कोशिश की. लेकिन, कोई भी पत्थरों को चलते नहीं देख पाया. वहीं, कई अन्य वैज्ञानिकों का मानना है कि ये पत्थर Dolomite और Syenite के बने हैं जिससे आसपास के पहाड़ बने हैं. वहीं, भौगोलिक कारणों की वजह से पहाड़ों से टूटकर पत्थर इस मरुस्थल पर आकर गिरते हैं और क्षैतिज दिशा में मूव करते हैं और अपने पीछे निशान छोड़ जाते हैं.

टाइम-लैप्स फ़ोटोग्राफ़ी

माना जाता है कि 2014 में वैज्ञानिकों ने टाइम-लैप्स फ़ोटोग्राफ़ी के ज़रिए पत्थरों को चलते देखने का दावा किया गया था. वैज्ञानिकों के अनुसार, ऐसा हवा, बर्फ़ और पानी के परफ़ेक्ट बैलेंस की वजह से होता है. वैज्ञानिक का कहना था कि सर्दियों के दौरान बारीश का पानी यहां एक झील बना देता है और रातों-रात ये झील जम जाती है. वहीं, अलगे दिन झील पिघलने लगती है. झील के ऊपर बर्फ़ की बिछी पतली चादर तेज हवा की वजह से टूटती है और इस वजह से वहां मौजूद पत्थर सरकने लगते हैं.

इस हॉन्टेड रेस्टोरेंट में ग्राहकों को खाना परोसते हैं 'भूत-प्रेत'

दुनिया भर के कई 'हॉन्टेड पैलेस', 'हॉन्टेड हॉउस', 'हॉन्टेड होटल' और 'हॉन्टेड म्यूज़ियम' के बारे में आप सभी ने सुना और पढ़ा ज़रूर होगा. दुनिया की कई ऐतिहासिक इमारतों को लेकर भी भूतिया क़िस्से और कहानियां मौजूद हैं. कुछ लोग इन कहानियों पर भरोसा कर लेते हैं, तो कुछ इन्हें लोगों का भ्रम कह कर टाल देते हैं. आज हम आपको एक ऐसे रेस्टोरेंट के बारे में बताने जा रहे हैं जो भूतिया रेस्टोरेंट तो नहीं है लेकिन हॉन्टेड से कुछ कम भी नहीं है.

जब भी हम किसी होटल या रेस्टोरेंट में खाना खाने जाते हैं तो वेटर चेहरे पर स्माइल के साथ हमारा वेलकम करते हैं. इस दौरान वो अदब के साथ हमें खाना भी परोसते हैं, लेकिन स्पेन में एक ऐसा रेस्टोरेंट है जहां 'वेटर' नहीं, बल्कि 'भूत' ग्राहकों का वेलकम करते हैं और उन्हें खाना सर्व करते हैं. दुनिया के इस अजीबो-ग़रीब रेस्टोरेंट का नाम ला मासिया एंकांटडा है.

दुनिया का ये अनोखा रेस्टोरेंट 17वीं सदी में बनी स्पेन की 'मासिया सेंटा रोजा' इमारत में मौजूद है. ये इमारत क़रीब दो सदियों तक किसी विवाद के चलते वीरान पड़ी रही. इसके बाद सन 1970 में इसके वंशजों ने इस इमारत में एक रेस्टोरेंट की शुरुआत की. इसके मालिकों का मानता है कि इस इमारत को कोई श्राप लग गया था. इसलिए उन्हें यहीं से ये विचार आया कि क्यों न इस रेस्टोरेंट को हॉन्टेड रेस्टोरेंट के रूप में चलाया जाए.

क्या खासियत है इस रेस्टोरेंट की?

इस भूतिया रेस्टोरेंट की सबसे ख़ास बात ये है कि इसमें केवल 60 सीटें ही मौजूद हैं, जिन्हें पहले से ही बुक कराना पड़ता है. इस रेस्टोरेंट में सिर्फ़ 3 घंटे ही खाना सर्व किया जाता है. इस दौरान खाना परोसने का समय भी तय होता है.

खाना सर्व करते हैं भूत-प्रेत

आप जैसे ही भूतिया रेस्टोरेंट के अंदर घुसेंगे खून से सनी तलवार से आपका स्वागत किया जायेगा. आगे बढ़ते ही खून से सना पंजा या खून से सनी लाशें लटकी मिलती हैं. सिटिंग एरिया में पहुंचने के बाद 'भूत' आकर पूछेगा What Would You Like To Have Sir... इस दौरान 'भूत-प्रेत' ही गेस्ट को खाना भी सर्व करते हैं. चौंकिये नहीं हम असल 'भूत-प्रेत' की बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि इस रेस्टोरेंट के कर्मचारी ही 'भूत-प्रेत' बनकर ग्राहकों का वेलकम करते हैं और उन्हें खाना परोसते हैं.

ग्राहकों के मनोरंजन का रखा जाता है ख़याल

इस रेस्टोरेंट में खाने के साथ-साथ ग्राहकों के मनोरंजन का भी ख़याल रखा जाता है. इसके लिए यहां पर एक 'हॉरर शो' का संचालन भी किया जाता है, जिसे देखना हर किसी के बस की बात नहीं होती. इस 'हॉरर शो' में ग्राहक महज मूक दर्शक बनकर नहीं बैठ सकता. वो खुद भी डरावनी कहानियों का हिस्सा बन जाते हैं, जिस वजह से डर तो लाजमी है. इस रेस्टोरेंट में मोबाइल, कैमरा, वीडियो रिकॉर्डिंग अदि प्रतिबंधित हैं, क्योंकि इससे 'हॉरर शो' पर असर पड़ता है.

अब आप इसे रेस्टोरेंट की मार्केटिंग स्ट्रेटेजी कहें या फिर कुछ और लेकिन इस तरह से लोग मनोरंजित तो होते ही हैं साथ ही रेस्टोरेंट में काम करने वाले कर्मचारियों को भी ग्राहकों का इस तरह मनोरंजन करना अच्छा लगता है.

बच्चों, अस्थमा और दिल के रोगियों के लिए 'नो एंट्री'

इस भूतिया रेस्टोरेंट में अस्थमा और दिल के रोगियों को जाना सख्त मना है. इसके अलावा गर्भवती महिलाएं, विकलांग व्यक्ति और 14 साल से कम उम्र के बच्चे भी यहां जा नहीं सकते हैं. ऐसा इसलिये क्योंकि 'हॉरर शो' से वो डर सकते हैं और किसी कमज़ोर दिल वाले के साथ अनहोनी हो सकती है.

यहां लोग चाव से खाते हैं मच्छर वाला बर्गर

बर्गर तो आपने खाए ही होंगे. खाए क्या, चाप ही डालते होंगे आप तो. आलू टिक्की, डबल चीज़ से लेकर चिकन, कीमे वाले. दुनिया भर में लोग अलग-अलग तरह के बर्गर खाते हैं. मगर क्या कभी आपने मच्छर वाला बर्गर ट्राई किया है?

क्या वाक़ई दुनिया में ऐसी जगह हैं, जहां मच्छर से बने बर्गर को चाव से खाया जाता है. इस मच्छर वाले बर्गर के टेस्ट को लोग काफ़ी पसंद करते हैं. साथ ही ये बर्गर प्रोटीन से फ़ुली पैक्ड होता है. यानी छोटे-छोटे से मच्छर मिलकर प्रोटीन की कमी पूरी कर डालते हैं.

मच्छरों को जमा कर बनती है बर्गर की टिक्की

मच्छर वाले बर्गर कुछ अफ़्रीकन देशों में बड़े चाव से खाए जाते हैं. दरअसल, बरसात के मौसम में अफ्रीका में हर साल विक्टोरिया झील के पानी से अनगिनत मच्छर पैदा होते हैं और विशाल झुंड बनाकर उड़ते हैं. ऐसे में मच्छरों से निपटने के लिए अफ्रीका के लोग इन मच्छरों को कीटनाशक के ज़रिए मारते नहीं, बल्क़ि इन्हें एक बर्तन में जमा कर लेते हैं. अफ्रीका में 'मिडज' नाम का समुदाय हवा में उड़ रहे इन मच्छरों को किसी बर्तन या फ्राइंग पैन से पकड़ते हैं और प्रोटीन से भरपूर मच्छर वाला बर्गर बनाते हैं.

5 लाख मच्छरों से बनती है एक टिक्की

बर्गर की एक टिक्की बनाने के लिए 5 लाख मच्छरों को इकट्ठा किया जाता है. मच्छर से बने इस बर्गर की टिक्की काली होती है. इसके लिए मच्छरों को एक साथ मैश कर टिक्की की शक्ल दी जाती है. उसके बाद धीमी आंच पर इन्हें सेंका जाता है. जिन लोगों को अपनी डाइट में हाई प्रोटीन की ज़रूरत होती है, उनके लिए ये टिक्की काफी फ़ायदेमंद होती है. कहते हैं कि इस टिक्की में आम चिकन मीट के मुकाबले कई गुना अधिक प्रोटीन होता है. हालांकि, अफ्रीका के सिर्फ कुछ ही इलाकों में इसे खाया जाता है. इन मच्छरों को प्रोटिन का काफी अच्छा स्रोत मानते हैं. यहां के लोगों के लिए मच्छर वाले बर्गर किसी ईश्वरीय तोहफ़े से कम नहीं हैं, क्योंकि अकाल के समय ये लाइफ़ सेवर साबित होते हैं. हर गांव की अपनी फ्लाई बर्गर रेसिपी होती है, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्हें कैसे पकाया जाता है, वे हमेशा हॉट केक की तरह बनते हैं.

भारत के इस गांव में रहते हैं बौने ही बौने

भारत के असम में बौने लोगों का अनोखा गांव बसा है। बौनों के गांव को अमार गांव यानी हमारा गांव भी कहा जाता है। बचपन में आपने लिलिपुट आइलैंड को किताबों में तो पढ़ा ही होगा। भारत-भूटान सीमा से कोई तीन-चार किलोमीटर पहले अमार नाम के इस गांव में 70 लोग रहते हैं। दूसरे गांवों के लोग इसे बौनों का गांव कहते हैं और गांव को बसाने वाले पवित्र राभा को बौनों का सरदार माना जाता है। अमार में किसी भी शख्स की ऊंचाई साढ़े तीन फीट से ज्यादा नहीं है। यहां कोई अपनी इच्छा से रहने आया है तो किसी को उसी के परिवार वाले यहां छोड़कर गए हैं।

इस जगह का नाम 'आमार गांव' है. असम में भारत-भूटान सीमा पर स्थित इस गांव में 70 के क़रीब लोग रहते हैं. ये सभी बौने हैं. दरअसल, इस गांव में पैदा होने वाले लोग छोटे कद के नहीं हो्ते, बल्कि इस गांव को ही बौने लोगों के लिये बसाया गया है. यहां रहने वाले हर शख़्स का कद 4 फ़ीट से कम है. 'आमार गांव' का मतलब हमारा गांव है. इसे साल 2011 में एक कलाकार ने बसाया है. नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा से ग्रेजुएट पबित्र राभा ने ये गांव बसाया है. यहां रहने वाले उन्हें अपना सरदार मानते हैं.

बता दें, इस गांव में कोई अपनी मर्ज़ी से आया है, तो किसी को उसके परिवार वाले छोड़ गये. असम के अलग-अलग जगहों से आए छोटे कद के ये लोग अब एक परिवार की तरह यहां रह रहे हैं. इस गांव को बसाने के पीछे पबित्र राभा का कहना है कि दुनिया छोटे कद वालों का मज़ाक बनाती है. ऐसे में उन्होंने इस तरह का गांव बसाने की सोची. फिर पबित्र ने असम के अलग-अलग हिस्सों से छोटे कद के इन लोगों को यहां इकट्ठा किया है. ये सभी लोग एक थियेटर ग्रुप में काम करते हैं. असम समेत देशभर के अलग-अलग हिस्सों में जाकर परफ़ॉर्म करते हैं. इसके पीछे पबित्र राभा की यही कोशिश है कि लोग इस बात को समझें कि ये लोग भी आम लोगों की ही तरह हैं. बस उनका कद हमसे छोटा है. लोग उन्हें बौना कहने के बजाय उनके नाम से बुलाएं. आज इस गांव में रहने वाले छोटे कद के लोग बड़ी मस्ती के साथ ज़िंदगी बसर कर रहे हैं. ये लोग दिन में खेतीबाड़ी करते हैं और शाम होते ही रंगमंच के कलाकार के तौर पर नज़र आने लगते हैं. यहां क़रीब हर रात नाटक होते ही होते हैं. आसपास के लोग भी इस नाटक मंडली के नाटक देखने आते हैं.

अमार गांव के लोगों का कद भले ही छोटा हो लेकिन इनकी सोच और इरादे पहाड़ जितने ऊंचे हैं। यहां के ये बौने लोग दिन में खेतीबाड़ी करते हैं और शाम होते ही रंगमंच के कलाकार के तौर पर नजर आने लगते हैं और शुरू हो जाता है नाटक का दौर। ये गांव दुनिया में होते हुए भी दुनिया से अलग है। आसपास के लोग जब यहां आते हैं तो छोटे कद की इस नाटक मंडली के नाटक देखकर इनकी जमकर तारीफ भी करते हैं। पूरे गांव में दो मंजिला लकड़ी के घर हैं, जिनमें ये लोग रहते हैं।

इस गांव को बसाने की कहानी भी बड़ी दिलचस्प है। बताया जाता है कि अमार गांव को 2011 में बौनों के सरदार पबित्र राभा ने बसाया था। राभा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से निकले रंगमंच कलाकार हैं। यह वही संस्थान है जिसनें ओमपुरी, इरफान खान, नवाजुद्दीव सिद्दीकी जैसे न जाने कितने मंझे कलाकार बॉलीवुड को दिए हैं।

पबित्र राभा ने एनएसडी से निकलने के बाद रंगमंच को बढ़ावा देने की सोची और उन्होंने इन छोटे कद के लोगों को कलाकार बनाने की ठानी। शुरुआत में स्थानीय लोगों ने राभा और इन सभी लोगों का मजाक उड़ाया। किसी ने बौनों का देश कहा, तो किसी ने बौनों की मंडली, लेकिन राभा ने इन लोगों का हौसला बढ़ाया और उन्हें मंझा हुआ कलाकार बनाया।

राष्ट्रबाण
सिवनी, गुरुवार 14 मई 2026

बालाघाट राष्ट्रबाण

• बैहर • बिरसा • कटंगी • तिरोड़ी • कटंगी • खैरलांजी • किरनापुर • लालबर्रा • लांजी • परसवाड़ा • वारासिवनी

डॉ. बिसेन से लोगों का सीधा जुड़ाव ही बनाये हुए है लोकप्रिय

डॉ. ढालसिंह बिसेन के 74 वें जन्मदिवस पर पत्रकार संजय सिंह का विशेष आलेख

प्रदेश की राजधानी भोपाल से लेकर देश की राजधानी दिल्ली तक आम लोगो की आवाज बुलंद करने वाले पूर्व मंत्री एवं पूर्व सांसद डां. ढालसिंह बिसेन ने राजनीति के पाँच दशक पूर्ण कर लिये है । अब उनका छठवां दशक प्रारंभ है राजनीति के इस लंबे सफर में कई उतार चढ़ाव आये किंतु आम लोगो से उनका जुड़ाव सतत बना रहा और आज भी बना है । यह आम लोगों का जुड़ाव ही है कि वे कोई पद पर हो या न हो लोग अपनी समास्याओं के समाधान का विश्वास लेकर बेधक उनके पास चले जाते है । स्वाभाव में शालीनता ऐसी है कि वे संबंधित के दु :ख दर्द को केवल सुनते ही नहीं बल्कि उसके निवारण का भी प्रयास करते है । डां. बिसेन का यही स्वाभाव उन्हें आम जनता में लोकप्रिय बनाये हुये है । कई विभागो के मंत्री, वित्त आयोग के अध्यक्ष और सांसद जैसे पदों पर रहते हुये अपने दायित्वों का कुशल निर्वाहन करने वाले डां. बिसेन आज की स्थिती में पदों से काफी ऊपर हो गये है।

राष्ट्रबाण सिवनी | संवाददाता
rashtrabaan.in

सरल, सौम्य और सुलझे हुए व्यक्तित्व के धनी म.प्र.शासन के पूर्व मंत्री एवं पूर्व सांसद डॉ. ढालसिंह बिसेन का आज 74 वां जन्मदिन है। डॉ. बिसेन का जन्म 14 मई 1952 को कल्चुरी राजाओं द्वारा बनाये गये ऐतिहासिक मंदिरों के ग्राम आष्टा से लगे एक छोटे से गांव पिपरिया में प्रतिष्ठित किसान स्व. सेवकराम जी बिसेन एवं स्व.श्रीमती सोनाबाई बिसेन के यहां हुआ। करीब 22 साल की उम्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने भारतीय जनसंघ (वर्तमान में भाजपा) से अपनी राजनीति की शुरूआत की थी। डॉ. बिसेन की चुनावी यात्रा की शुरूआत वर्ष 1976 में पंच के चुनाव से हुई और इसके 14 वर्ष बाद वर्ष 1990 में बरघाट विधानसभा का चुनाव जीतकर प्रदेश की राजनीति में पदार्पण किया। बरघाट विधानसभा से लगातार चार बार विधायक चुने गये। परिसीमन के कारण बरघाट विधानसभा क्षेत्र आरक्षित हो गया जिसके कारण पार्टी द्वारा उन्हें वर्ष 2008 एवं वर्ष 2013 में केवलारी विधानसभा से टिकिट दी गई किंतु दोनों बार जीत संभव नहीं हो सकी। पार्टी द्वारा उनकी योग्यता और अनुभव का उपयोग वर्ष 2019 में सिवनी बालाघाट संसदीय क्षेत्र की टिकिट देकर किया गया। इस लोकसभा चुनाव में दो लाख से भी अधिक मतों से चुनाव जीतकर उन्होंने इतिहास रच दिया।

डॉ. बिसेन का राजनैतिक सफ र काफी लम्बा है। राजनीति के बारे में आम लोगों की यही धारणा होती है कि यह कोयला की कोठरी की भांति होती है, इससे निकलने वाला कुछ न कुछ कालिख लेकर ही बाहर आता है। शुचिता की राजनीति को अपना ध्येय बनाकर चलने के कारण ही इतने लम्बे राजनैतिक जीवन में उमा जी की सरकार से लेकर बाबूलाल जी गौर की सरकार में वन, परिवहन, खनिज सहित विभिन्न विभाग के मंत्री और शिवराज सरकार में म.प्र.वित्त आयोग के अध्यक्ष रहने के बावजूद उन पर भ्रष्टाचार का दाग तो दूर एक छींटा भी नहीं लगा। विधायक और सांसद का भी कार्यकाल बेदाग रहा। वन मंत्री रहते हुए उनके द्वारा बनाई गई हरा पत्ता (तेंदूपत्ता) नीति का परिणाम आज सबके सामने है। इस नीति का अनुसरण बाद में छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक सहित कई प्रदेशों ने किया। इसी तरह शिक्षा मंत्री रहते हुए उन्होंने बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने कन्या सायकिल योजना और यूनिफार्म योजना बनाई जो आज भी भाजपा सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं में शामिल है।

जीवन के हर एक मुकाम पर संघर्षशील एवं संवेदनशीलता का परिचय देने वाले डॉ. बिसेन को विकास पुरूष कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। उन्होंने अपने चार टर्म के विधायक कार्यकाल के दौरान अपनी विधानसभा के लोगों की जरूरतों को जाना और वहां की भौगोलिक परिस्थितियों को समझा और उसके अनुरूप विकास का खांका खींचा। डॉ. बिसेन की दूरर्शिता का ही परिणाम है अक्सर सूखाग्रस्त घोषित रहने वाला समूचा बरघाट ब्लॉक आज धान के अलावा अन्य फसलों का लाभ लेकर फल फूल रहा है। कांचना मंडी जलाशय भी डॉ. बिसेन के सोच का नतीजा है जिससे साढ़े तीन हजार हेक्टेयर जमीन सिंचित करने का लक्ष्य के अलावा बरघाट नगर के लिए जलावर्धन योजना के माध्यम से जल संकट का हमेशा के लिए दूर होना हैं।

आज भले ही डॉ. बिसेन किसी पद पर नहीं है किन्तु राजनीति में सक्रिय तौर से बने हुए है। अपने सांसद के कार्यकाल में उन्होंने अधोसंरचना विकास के सिवनी एवं बालाघाट जिले में जो भी काम स्वीकृत कराये थे उन्हें शुरू कराने एवं जो कार्य बजट के या किसी कारणवश पूरे नहीं हो पाये उन्हें पूरा कराने के लिए सतत प्रयासरत है। डॉ. बिसेन का मानना है कि जिस जनता ने उन्हें अपना स्नेह दिया उन पर विश्वास किया तब उनका भी दायित्व बनता है कि वे जन भावनाओं को शिरोधार्य करें और विश्वास पर खरे उतरे। उनका यह भी मानना है कि विकास के लिए किसी पद की नहीं बल्कि सामर्थ्य और योग्यता की जरूरत होती है।

पासपोर्ट कार्यालय

सिवनी जिलेवासियों को पासपोर्ट बनवाने के लिये भोपाल के चक्कर लगाना पड़ता था समय भी नष्ट होता था और रूपया भी । वर्ष 2019 में सांसद बनने के बाद डां. बिसेन ने सिवनी मुख्यालय मे पासपोर्ट कार्यालय खुलवाने का प्रयास शुरू कर दिया । नीतिगत निर्णय अनुरूप एक संसदीय क्षेत्र मे एक ही पासपोर्ट कार्यालय खुल सकता था। यहां डॉ. बिसेन के अनुभव और लगन का ही कमाल है कि आज जिले मे पासपोर्ट कार्यालय है और भोपाल की भाग-दौड़ से जिलवासियों को मुक्ति मिल गई है।

सेंट्रल स्कूल एवं एफ. एम.

जिले में मात्र दो सिवनी एवं लखनादौन में सेन्ट्रल स्कूल है । जिले की जनसंख्या और भौगोलिक स्थिती के हिसाब से चार सेन्ट्रल स्कूल होना चाहिये थे । डां. बिसेन ने इस जरूरत को महसूस किया और प्रयास कर बरघाट के ग्राम जैवनारा में सेन्ट्रल स्कूल की स्वीकृति दिला दी थी । यह कार्य प्रक्रियाधीन है । बालाघाट जिले के तिरोड़ी मे एक एक सेन्ट्रल स्कूल भी उन्होंने ही स्वीकृत कराया था । सिवनी मे 100 वॉट का एफ.एम. रेडियो रिले सेन्टर भी प्रारंभ हो चुका है।

फ्लाई ओवर, ओवर ब्रिज

अपने सांसद कार्यकाल के प्रारंभिक वर्षो में ही डां. बिसेन ने फोरलेन निर्माण मे आने वाली सारी बाधायें दूर की जिसका परिणाम है एशिया का सबसे बड़ा और सुंदर साउंड एंड लाईट प्रूफ फ्लाई ओवर युक्त मार्ग मिला। इसी के साथ सिवनी को खैरीटेक से नगझर तक फोरलेन मार्ग के साथ नागपुर रोड रेल्वे क्रांसिंग पर ओवर ब्रिज स्वीकृत ही नहीं कराया बल्कि 126 करोड़ रूपये का बजट भी दिलाया, जिसका कार्य प्रारंभ है । रेल्वे क्रांसिंग पर ओवर ब्रिज की मांग भी वर्षो पुरानी थी जिसके लिये डां. बिसेन का भागीरथी प्रयास हमेशा याद रखा जायेगा ।

सड़कों का बिछाया जाल

कोहका से बंडोल 43 किलोमीटर लागत करीब 108 करोड़ कार्य प्रगतिरत । इस टू लेन मार्ग से छिंदवाड़ा से जबलपुर की दूरी जहां कम होगी वहीं फुलारा टोल प्लाजा से भी निजात मिल जायेगी। यही नहीं इस मार्ग मे पडने वाले सभी ग्रामों को भी सीधी आवागमन की सुविधा उपलब्ध होगी। ग्राम भोंगाखेड़ा से छुआई - घोटी - जाम - रामगढ़ से चौरई तक लागत 89 करोड़ की सड़क जिसका काम जारी है । इन बड़ी एवं महत्वपूर्ण सड़को के अलावा कलारबांकी से कान्हीवाड़ा, सोनाडोंगरी से खमरिया सहित अन्य सड़क मार्ग भी हरहरपुर में बैनगंगा नदी, हिर्री नदी पर दो उच्च स्तरीय पुल सहित फोरलेन में तीन फुट ओवर ब्रिज एवं सर्विस रोड, अन्य छोटी दूरी की सड़के सहित अनेक निर्माण कार्य डां. बिसेन के सांसद कार्यकाल का ही नतीजा है । प्रधानमंत्री संड़क योजना फेस तीन अंतर्गत सिवनी एवं बरघाट विधानसभा क्षेत्र की अनेक सड़को का चौड़ीकरण भी करवाया । इसके अलावा बरघाट नाका रेल्वे क्रासिंग के ओवर ब्रिज सहित सिवनी बालाघाट फोरलेन मार्ग के लिये डां. बिसेन की मांग पर तत्कालीन एवं वर्तमान सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने वर्ष 2023 में बालाघाट एवं मंडला प्रवास के दौरान घोषणा भी कर दी थी । विभागीय अधिकारियों द्वारा डीपीआर भी तैयार कर ली गयी थी किंतु डां. बिसेन का कार्यकाल खत्म होने के बाद निर्माण एजेंसी एमपी आर डी सी ने डीपीआर बदलकर डूंडासिवनी बायपास से बालाघाट तक की नयी डीपीआर बना ली है जिससे बरघाट रोड रेलवे क्रासिंग पर बनने वाला ओवर ब्रिज की संभावना समाप्त हो गयी है । जिसके लिये डां. बिसेन लगातार पत्राचार कर रहे है एवं केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तक इस संबंध में विस्तृत चर्चा कर चुके है । अब जरूरत है वर्तमान जनप्रतिनिधियों की जो अगर दबाव बनायेंगे तो बरघाट रोड रेलवे क्रासिंग पर ओवर ब्रिज बन सकता है ।

बधाई एवं शुभकामनायें

मानवीय संवेदनाओं के प्रति अजेय आस्था, सादगी और सहजता के धनी, कर्म के प्रति गंभीर दृष्टिकोण, जनसेवा के लिये समर्पण, आपने दायित्वों के प्रति निष्ठा का भाव ही डॉ. ढालसिंह बिसेन को वर्तमान राजनैतिक परिवेश में एक अलग ही पहचान देता है। लम्बे राजनैतिक सफर में अनेक उपलब्धियों की सौगात देने वाले डॉ. ढालसिंह बिसेन को उनके 74 वां जन्मदिवस पर ढेर सारी बधाई और शुभकामनायें, इस अपेक्षा के साथ कि भविष्य मे भी वे मूल्यों और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुये अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करें और अपने राजनैतिक सफर मे जिले को उसके वर्तमान और भविष्य की अनेक उपलब्धियां दें।

रेलवे पर विशेष फोकस

बतौर सांसद उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र में केंद्र सरकार की अधोसंरचना विकास योजनाओं को स्वीकृत कराया। डां बिसेन के सांसद बनने के पहले सिवनी रेल्वे स्टेशन का जो स्वरूप था उनके सांसद बनने के बाद पूरी तरह बदल गया । आज एन एस जी 6 की श्रेणी में आने वाला रेलवे स्टेशन यात्री सुविधाओं में बी श्रेणी के स्टेशन को मात कर रहा है तथा चार प्लेटफार्म होने से लंबी दूरी की ट्रेनों का मार्ग भी प्रशस्त कर रहा है । नागपुर रोड की रेलवे क्रासिंग पर निर्माणाधीन ओवर ब्रिज और सीलादेही से नगझर तक फोरलेन का निर्माण की सौगात डां. बिसेन के खाते में ही जाती है । बालाघाट के रेलवे स्टेशन की भी भविष्य में जो सुंदर तस्वीर सामने आने वाली है वह डां. बिसेन के संसदीय कार्यकाल के प्रयासों का ही नतीजा है । बालाघाट कटंगी मार्ग में कुछ फ्लाई ओवर चालू हो गये है तथा कुछ का निर्माण पूर्णता की ओर है । आने वाले समय में जब रेल्वे स्टेशन सिवनी एवं बालाघाट के सभी निर्माण कार्य पूर्ण हो जायेंगे तो उसकी तस्वीर ही बदल जायेगी । भविष्य में सिवनी रेलवे स्टेशन जंक्शन भी बन सकता है । डां. बिसेन की मांग पर सिवनी से तिरोड़ी नई रेल लाईन हेतु सर्वे हो चुका है और अब गेंद वर्तमान सांसद के पाले में है ।

रैक पाइंट एवं नया बायपास

सिवनी का व्यापार बढ़े और किसानों को उपज का अन्य शहरों के बाजारों से उचित दाम मिले इसके लिये उन्होने रेक प्वाइंट स्वीकृत कराया। रैक पॉइंट से आज सिवनी के व्यपारियों का व्यापार जहां बढ़ रहा है वहीं जिले के अन्नदाताओं को उनकी उपज का उचित दाम मिल रहा है। रसायनिक खाद, सीमेन्ट, लौहा के रैक आने का जहां मार्ग प्रशस्त हुआ है वहीं गिटटी एवं अन्य मटेरियल परिवहन की भी स्वीकृति उन्होंने ही दिलाई थी । रैक पाइंट बनने से नगर को एक नया बाईपास भी मिला है ।

कटंगी में मौसम का यू-टर्न

मई में दिखा जुलाई जैसा नजारा, तेज आंधी के साथ झमाझम बारिश

राष्ट्रबाण कटंगी | संवाददाता
rashtrabaan.in

मई की भीषण गर्मी के बीच आज कटंगी नगर और आसपास के इलाकों में मौसम का मिजाज अचानक बदल गया। तेज धूलभरी आंधी के साथ शुरू हुई मूसलाधार बारिश ने लोगों को मई के महीने में ही जुलाई-अगस्त के मानसून की याद दिला दी। दोपहर तक उमस और तेज धूप से लोग बेहाल थे। अचानक आसमान में काले बादल छाए और तेज रफ्तार तूफान शुरू हो गया। आंधी के ठीक बाद शुरू हुई भारी बारिश से पूरा नगर जलमग्न हो गया। इस बेमौसम बारिश से भीषण गर्मी से जूझ रहे नागरिकों को बड़ी राहत मिली है।

जनजीवन और व्यवस्थाओं पर असर बिजली आपूर्ति ठप

तेज हवाओं के कारण एहतियात के तौर पर पूरे नगर की बिजली बंद कर दी गई। अचानक आए इस तूफान और बारिश की वजह से बाजार में अफरा-तफरी मच गई। वही तेज आंधी के कारण कुछ स्थानों पर पेड़ों की शाखाएं टूटने और होर्डिंग्स गिरने की खबर है। इस अप्रत्याशित मानसूनी अहसास ने जहां एक तरफ लोगों को चिलचिलाती गर्मी से राहत दी है, वहीं अचानक आए इस बदलाव से लोग हैरान भी हैं।

मौत की आगोश में समाया पूरा परिवार

मासूमों को सीने से बांध पिता ने कुएं में लगाई छलांग

राष्ट्रबाण कटंगी | संवाददाता
rashtrabaan.in

जनपद पंचायत कटंगी के ग्राम जराहमोहगांव के गोंडीटोला से एक ऐसी खबर सामने आई है जिसने न केवल समूचे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी सुन्न कर दिया है। यहाँ एक पिता ने अपने दो मासूम बच्चों के साथ कुएं में कूदकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। आत्मघाती कदम उठाने से पहले युवक ने सोशल मीडिया पर अपनी हताशा व्यक्त करते हुए लिखा नहीं है जिंदा रहने की आरजू।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, गोंडीटोला निवासी श्याम नागेन्द्र (36) ने बीती रात इस खौफनाक वारदात को अंजाम दिया। घटना की क्रूरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि श्याम ने अपने पुत्र वंश (5) और पुत्री भुवी (3) को एक गमछे के सहारे अपने शरीर से मजबूती से बांध लिया था, ताकि मौत के द्वार पर भी वे अलग न हो सकें। अंधेरे की चादर ओढ़े श्याम ने दोनों बच्चों सहित गांव के एक गहरे कुएं में छलांग लगा दी। पानी के गहरे आगोश में डूबने से तीनों की दर्दनाक मौत हो गई।

जांच में जुटी पुलिस

मामले की गंभीरता को देखते हुए अनुविभागीय अधिकारी पुलिस विवेक कुमार शर्मा एवं थाना निरीक्षक धर्मेंद्र कुशराम ने दल-बल के साथ मौका-ए-वारदात का मुआयना किया। पुलिस के अनुसार आत्महत्या के सटीक कारणों का अभी खुलासा नहीं हुआ है। वही पारिवारिक कलह, मानसिक तनाव या आर्थिक तंगी जैसे तमाम पहलुओं की बारीकी से जांच की जा रही है। साथ ही परिजनों और ग्रामीणों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं ताकि इस आत्मघाती कदम के पीछे की कड़वी सच्चाई सामने आ सके।

व्हाट्सएप स्टेटस सुसाइड नोट

इस अनहोनी का आभास तब हुआ जब परिजनों और मित्रों ने श्याम का व्हाट्सएप स्टेटस देखा। स्टेटस पर लिखी निराशाजनक पंक्तियों ने परिजनों के मन में अनिष्ट की आशंका पैदा कर दी। आनन-फानन में इसकी सूचना कटंगी थाना पुलिस को दी गई। रात भर तलाश जारी रही, लेकिन सुबह की पहली किरण के साथ जो मंजर सामने आया, उसने देखने वालों की रूह कंपा दी।

गमगीन हुआ इलाका, हर आंख नम

जैसे ही शवों को कुएं से बाहर निकाला गया, घटनास्थल पर मौजूद सैकड़ों ग्रामीणों का कलेजा मुंह को आ गया। पिता के शरीर से लिपटे उन मासूमों को देखकर हर किसी की आंखें छलक उठीं। गांव में पसरे मातम के बीच कटंगी पुलिस ने शवों का पंचनामा तैयार कर उन्हें पोस्टमार्टम के लिए शासकीय अस्पताल भेजा है।

राष्ट्रबाण
सिवनी, गुरुवार 14 मई 2026

सिवनी राष्ट्रबाण

• बरघाट • छपारा • धनोरा • घंसौर • केवलारी • कुरई • लखनादौन • सिवनी ग्रामीण

खाकी पर रिश्वत का दाग, पकड़ाया कोतवाली का खाकीधारक भेड़िया

सिवनी में लोकायुक्त का बड़ा धमाका, 20 हजार की घूस लेते एएसआई दिनेश रघुवंशी रंगे हाथों गिरफ्तार

भ्रष्टाचार का 'सेवा शुल्क' न्याय के बदले मांगी मोटी रकम

सिवनी| संवाददाता
rashtrabaan.in

कहते हैं कि 'भगवान की लाठी में आवाज नहीं होती, लेकिन जब वह चलती है तो इंसाफ होकर रहता है।' कुछ ऐसा ही न्याय सिवनी जिले के कोतवाली थाने में देखने को मिला, जहाँ न्याय की रक्षा की कसम खाने वाली 'खाकी' खुद भ्रष्टाचार के दलदल में सनी पाई गई। जबलपुर लोकायुक्त की टीम ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए कोतवाली थाने में पदस्थ सहायक उपनिरीक्षक दिनेश रघुवंशी को 20 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों दबोच लिया है।

भ्रष्टाचार का यह घिनौना खेल कोतवाली थाने की चार दीवारी के भीतर बुना गया था। जहां फरियादी नंद किशोर चौरसिया अपने एक मामले में निष्पक्ष जांच की उम्मीद लेकर पुलिस के पास पहुंचे थे। लेकिन, जांच अधिकारी एएसआई दिनेश रघुवंशी की नीयत डोल गई और वह पीड़ित को न्याय दिलाने की वजाय उसे ही परेशान करने लगे। आरोप है कि रघुवंशी ने मामले की विवेचना फरियादी के पक्ष में करने और कानूनी कार्रवाई को 'ढीला' करने के बदले एक मोटी रकम की मांग की थी।

भ्रष्ट दिनेश रघुवंशी पर कार्रवाई करती जबलपुर लोकायुक्त पुलिस की टीम।

पीड़ित ने घुटने टेकने के बजाय चुना संघर्ष का रास्ता

आमतौर पर लोग पुलिसिया पचड़े और रसूखदार अधिकारियों से डरकर उनकी अवैध मांगों के आगे झुक जाते हैं, लेकिन नंद किशोर चौरसिया ने भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने का मन बनाया। उन्होंने रिश्वतखोर अधिकारी की मांग को पूरा करने के बजाय जबलपुर लोकायुक्त का दरवाजा खटखटाया और पूरे मामले की लिखित शिकायत दर्ज कराई। लोकायुक्त टीम ने शिकायत की गंभीरता को देखते हुए तुरंत जाल बिछाया और आरोपी अधिकारी को बेनकाब करने की रणनीति तैयार की।

दिनेश रघुवंशी
एएसआई : शिंकजे में रिश्वतखोर।

नंद किशोर चौरसिया,
शिकायतकर्ता : बकरे की अम्मा कब तक खैर मनाती।

नीतू त्रिपाठी, डीएसपी लोकायुक्त : भ्रष्टो को उनके अंजाम तक पहुंचाना हमारा कर्तव्य।

बस स्टैंड पर हाई-वोल्टेज ड्रामा, ऐसे बिछाया गया जाल

लोकायुक्त की टीम ने योजनाबद्ध तरीके से जाल बिछाया। तय रणनीति के अनुसार, रिश्वत की पहली किस्त देने के लिए सिवनी बस स्टैंड का स्थान चुना गया। एएसआई दिनेश रघुवंशी इस बात से पूरी तरह अनजान थे कि उनके पैर भ्रष्टाचार के जिस जाल की ओर बढ़ रहे हैं, वहां से वापसी मुमकिन नहीं है। जैसे ही रघुवंशी बस स्टैंड पहुंचे और फरियादी से रिश्वत के 20 हजार रुपये अपने हाथ में थामे, सादे कपड़ों में मुस्तैद लोकायुक्त के जांबाजों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया। अचानक हुई इस कार्रवाई से एएसआई को संभलने तक का मौका नहीं मिला और वह लोकायुक्त के जाल में फंस गए।

एएसआई का तर्क बेहद शर्मनाक था, उनका कहना था कि अगर केस को मनमुताबिक मोड़ना है, तो 'सेवा शुल्क' तो देना ही होगा। नहीं तो आरोपियों के पक्ष में कार्रवाई कर दूंगा तो उनकी जमानत हो जाएगी फिर जो लगे करते रहना।

जबलपुर लोकायुक्त की इस कार्रवाई से विभाग में हड़कंप मच गया है। आरोपी एएसआई के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। इस कार्रवाई से उन भ्रष्ट अधिकारियों को सख्त संदेश गया है जो अपनी कुर्सी का इस्तेमाल जनता की सेवा के बजाय अपनी जेबें भरने के लिए करते हैं। फिलहाल, सिवनी जिले में यह मामला चर्चा का विषय बना हुआ है और लोग लोकायुक्त टीम की इस जांबाजी की प्रशंसा कर रहे हैं। अब देखना यह होगा कि विभाग ऐसे दागी अधिकारियों पर आगे क्या कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई करता है।

गुलाबी हुए हाथ, बेनकाब हुआ भ्रष्टाचार

लोकायुक्त टीम ने जब आरोपी एएसआई को हिरासत में लिया और रासायनिक घोल (फिनोलफ्थलीन) से उनके हाथ धुलवाए, तो पानी का रंग तुरंत गुलाबी हो गया। नोटों पर लगे विशेष पाउडर ने एएसआई की संलिप्तता का पुख्ता वैज्ञानिक प्रमाण दे दिया। भरे बाजार में हुई इस कार्रवाई ने पुलिस महकमे में हड़कंप मचा दिया है।

वर्दी की गरिमा को लगा गहरा धक्का

यह घटना केवल एक अधिकारी की गिरफ्तारी नहीं है, बल्कि खाकी के उस भरोसे पर चोट है जो आम जनता अपनी सुरक्षा के लिए 'खाकी' पर करती है। एक तरफ जहां पुलिस विभाग अपनी छवि सुधारने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहा है, वहीं दिनेश रघुवंशी जैसे अधिकारी चंद रुपयों की खातिर वर्दी की गरिमा को ताक पर रख रहे हैं। दिनेश रघुवंशी जैसे ख़ाकीधारक भेड़िये के कारण खाकी बदनाम है और इंसाफ की उम्मीद में जनता हलकान है।

एरियर के बदले घूस मांग रहा बाबू 10 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

सिवनी| संवाददाता
rashtrabaan.in

सिवनी। संवाददाता

प्रदेश में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जारी 'जीरो टॉलरेंस' की नीति के तहत जबलपुर लोकायुक्त की टीम ने आज सिवनी जिले के धनोरा में एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। विकासखंड अधिकारी कार्यालय में पदस्थ सहायक ग्रेड-3 अरुण कुमार कुमरे को लोकायुक्त की टीम ने 10 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों दबोच लिया। आरोपी बाबू एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (भृत्य) के जीवन निर्वाह भत्ते की राशि जारी करने के एवज में मोटी रकम की मांग कर रहा था।

यह पूरा मामला एक गरीब कर्मचारी के हक से जुड़ा है। आवेदक देवेंद्र कुमार सिरसाम, जो वर्तमान में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सुनवारा (विकासखंड धनोरा) में भृत्य के पद पर पदस्थ हैं, पूर्व में भीमगढ़ (छपारा) में पदस्थ थे। वहां निलंबन के बाद जब उनकी बहाली हुई, तो उनके 14 माह की निलंबन अवधि का लगभग 1 लाख 65 हजार रुपये का जीवन निर्वाह भत्ता बकाया था।

इसी जायज राशि को निकलवाने के लिए देवेंद्र पिछले कई दिनों से विकासखंड अधिकारी कार्यालय धनोरा के चक्कर काट रहे थे। वहां स्थापना शाखा में

भ्रष्ट बाबू पर कार्रवाई करते लोकायुक्त टीम।

पदस्थ बाबू अरुण कुमार कुमरे ने मदद के बजाय सौदेबाजी शुरू कर दी। आरोपी बाबू ने भत्ते की राशि जारी करने के बदले में आवेदक से 32,000 रुपये की रिश्वत मांगी। आर्थिक रूप से परेशान भृत्य ने जब असमर्थता जताई, तो काफी मान-मनौव्वल के बाद सौदा 25,000 रुपये में तय हुआ। फरियादी देवेंद्र भ्रष्टाचार के इस खेल के आगे झुकना नहीं चाहते थे, लिहाजा उन्होंने इसकी शिकायत पुलिस अधीक्षक लोकायुक्त, जबलपुर से कर दी। लोकायुक्त टीम ने जब शिकायत का सत्यापन किया, तो आरोपी की लालच की पुष्टि हो गई। इसके बाद योजनाबद्ध तरीके से जाल बिछाया गया। आज दिनांक 13 मई 2026 को लोकायुक्त की टीम ने धनोरा कार्यालय में घेराबंदी की। जैसे ही आवेदक देवेंद्र कुमार सिरसाम ने रिश्वत की पहली किस्त के रूप में 10,000 रुपये आरोपी अरुण कुमार कुमरे को थमाए, पहले से तैयार लोकायुक्त के दल ने उसे रंगे हाथों दबोच लिया। पकड़े जाते ही कार्यालय में हड़कंप मच गया। लोकायुक्त टीम ने जब आरोपी के हाथ धुलवाए, तो पानी का रंग गुलाबी हो गया, जो इस भ्रष्टाचार का सबसे पुख्ता सबूत बना।

जबलपुर लोकायुक्त की इस टीम का नेतृत्व निरीक्षक जितेंद्र यादव और निरीक्षक बृज मोहन नरवरिया ने किया। आरोपी के विरुद्ध भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 (संशोधन 2018) की धारा 7, 13(1)क्ष और 13(2) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

फिलहाल लोकायुक्त की टीम कार्यालय के अन्य दस्तावेजों की भी जांच कर रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या इस खेल में अन्य लोग भी शामिल थे। सिवनी जिले में इस कार्रवाई के बाद से अन्य विभागों के भ्रष्ट अधिकारियों में हड़कंप मचा हुआ है।

मुंगवानी में विधायक दिनेश राय मुनमुन का जलवा

सिवनी| संवाददाता
rashtrabaan.in

दिन बुधवार 13 मई को जिला नरसिंहपुर के ग्राम मुंगवानी की धरती उस वक्त सियासी गरमाहट और जन-सरोकार की गवाह बनी, जब सिवनी के विधायक दिनेश राय मुनमुन ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सामने न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, बल्कि किसानों की समस्याओं को लेकर सीधे मोर्चा खोल दिया।

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की 36वीं किस्त के अंतरण कार्यक्रम में जहाँ सवा करोड़ बहनों के खातों में खुशियों की सौगात बरस रही थी, वहीं विधायक दिनेश राय ने इस मंच का उपयोग अपनी जनता की पीड़ा पहुँचाने के लिए किया। साफा पहनकर हुए शाही स्वागत के बीच विधायक दिनेश राय ने सभा को संबोधित करते हुए माहौल में जोश भर दिया। सिर्फ शिरकत ही नहीं, बल्कि विधायक दिनेश राय ने जनता के वकील की भूमिका निभाते हुए मुख्यमंत्री को एक तीखा ज्ञापन सौंपा। उन्होंने सिवनी विधानसभा में गेंहू खरीदी के दौरान किसानों को हो रही भारी अव्यवस्थाओं और परेशानियों को पुरजोर तरीके से उठाया।

सिवनी में बारिश ने ठंडे किए गर्मी के तेवर

सिवनी। सिवनी जिले में बुधवार दोपहर अचानक मौसम का मिजाज बदल गया। दोपहर करीब 2 बजे तेज हवाओं के साथ झमाझम बारिश शुरू हो गई। सिवनी मुख्यालय सहित जिले के कई क्षेत्रों में हल्की ओलावृष्टि भी दर्ज की गई। इस बदलाव से जहां एक ओर लोगों को भीषण गर्मी से राहत मिली, वहीं किसानों की चिंताएं बढ़ गईं। तेज हवा और बारिश के कारण शहर के उर्दू स्कूल के पास एक पेड़ की डालियां टूटकर स्कूल की छत पर गिर गईं। इसके अतिरिक्त, सड़क किनारे रखे छोटे बोर्ड भी तेज हवा के चलते सड़क पर आ गिरे। मौसम के इस बदले स्वरूप ने समर्थन मूल्य पर खरीदे गए गेहूं के भंडारण को लेकर नई चुनौती खड़ी कर दी है।

ज्ञानचंद का साइकिल स्टंट

सिवनी| संवाददाता
rashtrabaan.in

शहर ने सादगी का एक ऐसा अनोखा प्रदर्शन देखा, जिसमें पसीना कम और दिखावा ज्यादा नजर आया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ईंधन बचाओ संदेश का झंडा बुलंद करने के लिए नगर पालिका अध्यक्ष ज्ञानचंद सनोडिया साइकिल पर सवार होकर कार्यालय तो पहुँचे, लेकिन इस देशभक्ति के पीछे का असली तेल कहीं और जल रहा था।

अध्यक्ष ज्ञानचंद ने पैडल मारकर देशहित में बूंद-बूंद बचाने का जो स्वांग रचा, उसकी हवा तब निकल गई जब पीछे मुड़कर देखा गया। दरअसल, अध्यक्ष की इस

सादगी भरी सवारी का वीडियो बनाने वाला शख्स खुद एक धुआँ उगलती गाड़ी पर शान से बैठा था। देश का डीजल बचाने का ढोंग तो हेडलाइन बन गया, लेकिन वीडियो ग्राफर की गाड़ी ने जितना पेट्रोल फूँका, उसका हिसाब कौन देगा? क्या यह जागरूक नागरिक का कर्तव्य है या सिर्फ सोशल मीडिया पर 'लाइक' बटोरने की कलाकारी?

सोशल मीडिया में नारे दिए गए कि सादगी ही सेवा है। मगर जनता पूछ रही है कि अगर मकसद ईंधन बचाना था, तो कैमरामैन को पैदल या साइकिल पर क्यों नहीं रखा? क्या यह मुहिम सिर्फ फोटो खिंचवाने तक सीमित है? पीछे चल रही मोटरसाइकिल का धुआँ क्या 'देशहित' में आता है?

पेंच के जंगलों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का तीसरा नेत्र

अब थर-थर कांपेंगे शिकारी, ग्रामीण रहेंगे सुरक्षित!

सिवनी| संवाददाता
rashtrabaan.in

पेंच टाइगर रिजर्व के घने जंगलों में अब सिर्फ बाघों की दहाड़ ही नहीं, बल्कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दिमाग भी गूंजेगा। जंगल के मोगली लैंड में अब परिंदा भी पर मारेगा, तो उसकी खबर सीधे कंट्रोल रूम को होगी। पेंच प्रबंधन ने वन्यप्राणियों की सटीक लोकेशन और ग्रामीणों की सुरक्षा के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस लैस हाई-टेक कैमरों का जाल बिछा दिया है।

पेंच के डिप्टी डायरेक्टर पुनीत गोयल ने इस तकनीक के बारे में बताते हुए कहा कि यह सिर्फ कैमरा नहीं, बल्कि जंगल का डिजिटल बॉडीगार्ड है। उन्होंने साफ किया कि जैसे ही कोई बाघ या तेंदुआ इंसानी बस्ती के करीब आएगा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वाले कैमरे उसे पलक झपकते ही पहचान लेंगे।

खूंखार जानवरों के मूवमेंट की जानकारी तुरंत ग्रामीणों तक पहुंचाई जा रही है, ताकि आमना-सामना होने से पहले ही लोग सतर्क हो जाएं। वही घुसपैठियों और अवैध शिकार करने वालों के लिए ये कैमरे काल साबित होंगे। अंधेरे में भी ये कैमरे छठी इंद्री की तरह काम करते हैं। अक्सर देखा गया है कि जंगल किनारे बसे गांवों में बाघों की दस्तक से दहशत फैल जाती थी। लेकिन अब सेंसर और सॉफ्टवेयर की जुगलबंदी ने खेल बदल दिया है। पुनीत गोयल के मुताबिक, इस तकनीक से न केवल इंसानी जान बचेगी, बल्कि वन्यजीवों को भी सुरक्षित कॉरिडोर मिलेगा। वही अब पेंच में मोगली के साथ-साथ मशीनों का भी राज होगा। ग्रामीण अब बेखौफ सो सकेंगे क्योंकि उनकी रखवाली खुद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कर रहा है। पेंच प्रबंधन का यह मास्टरस्ट्रोक पूरे देश के नेशनल पार्कों के लिए एक नजीर बन गया है।

इनका कहना है

हम तकनीक और प्रकृति के बीच एक ऐसा सेतु बना रहे हैं जहाँ इंसान और जानवर दोनों सुरक्षित रहें। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कैमरों की मदद से अब हमारी रिस्पॉन्स टीम पहले से कहीं ज्यादा तेज और सटीक हो गई है।

— **पुनीत गोयल,** डिप्टी डायरेक्टर, पेंच टाइगर रिजर्व

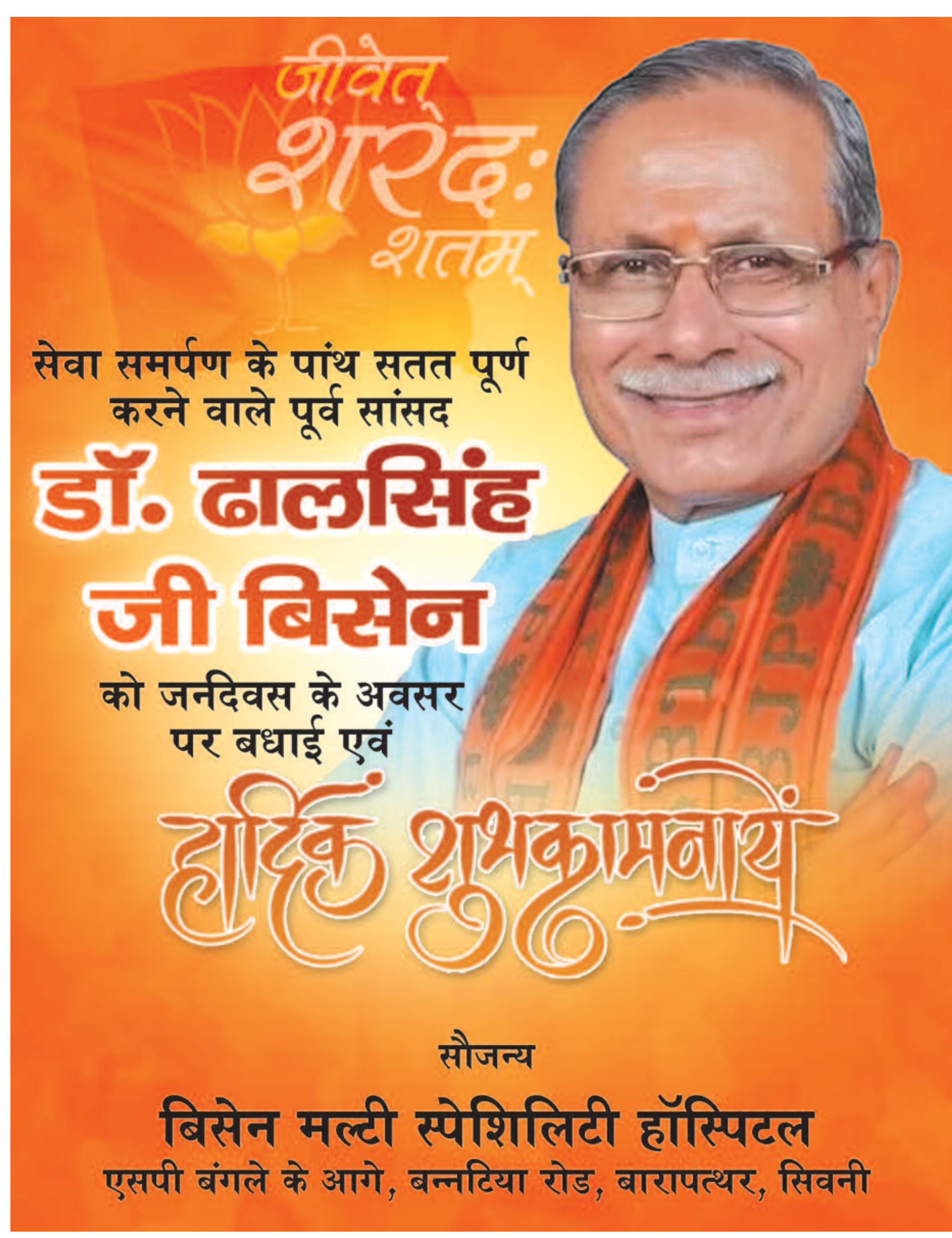

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक संजय बघेल द्वारा श्री सिद्धिविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एमपी नगर भोपाल म.प्र से मुद्रित कराकर शिवनगर कॉलोनी सड़क मोहल्ला मरझोर जिला सिवनी से प्रकाशित।
RNI NO.: MPHIN/2015/72804 , **संपादक*** **संजय बघेल** पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र सिवनी होगा। E-mail: rashtrabaan@gmail.com. mob: 7000427433